pUda [N3rnexnl SkU
Aapka haaRdk Svagt
krta hE

पाठ 2 लाख की चूड़ियाँ लेखक कामतानाथ

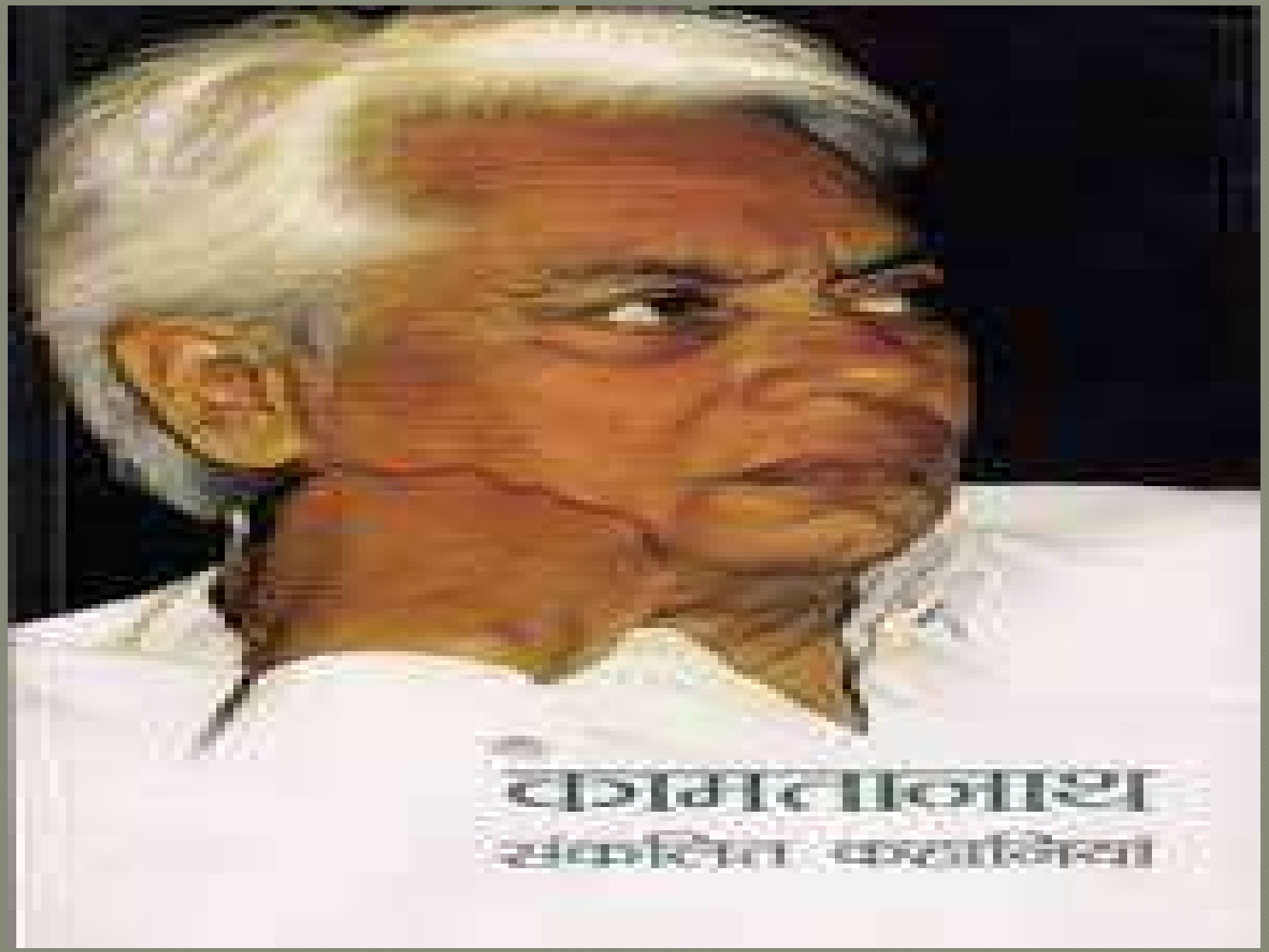
दादाभाई नौरोजी

पाठ 2 लाख की चूड़ियाँ

-

जन्म : 22 सितंबर 1935, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
भाषा : हिंदी
विधाएँ : उपन्यास, कहानी, नाटक
मुख्य कृतियाँ

उपन्यास : समुद्र तट पर खुलने वाली खिड़की, सुबह होने तक, एक और हिंदु स्तान, तुम्हारे नाम, काल-कथा (दो खंड), पिघलेगी बर्फ
कहानी संग्रह : छुट्टियाँ, तीसरी साँस, सब ठीक हो जाएगा, शिकस्त, रिश्ते-नाते, आकाश से झाँकता वह चेहरा, सोवियत संघ का पतन क्यों हुआ
नाटक : दिशाहीन, फूलन, कल्पतरु की छाया, दाखला डॉट काम, संक्रमण, वार्ड नं एक (एकांकी), भारत भाग्य विधाता (प्रहसन), औरतें (गाइ द मोपांसा की कहानियों पर आधारित)
अनुवाद : प्रेत (घोस्ट : हेनरिक इब्सन)
संपादन : कथांतर
सम्मान

पहल सम्मान, मुक्तिबोध पुरस्कार, यशपाल पुरस्कार, साहित्य भूषण पुरस्कार
निधन

7 दिसंबर 2012, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

पाठ का सार

लाक की चूड़ियाँ पाठ एक बदलू नाम के व्यक्ति व उसके व्यवसाय पर आधारित है। बदलू बहुत ही सुंदर लाक की चूड़ियां बनाता था। उसकी चिड़ियाँ आस पास के हर गाँव में पसंद की जाती थी। परंतु एक दिन उसका व्यवसाय ठप हो गया। इसका कारण थी कांच की चूड़ियाँ। जब से मशीनी कारीगरी शुरू हुई तब से पुराने कारीगर जो अपने हाथ से बेहतरीन कारीगरी करते थे का धंदा बंद हो गया। इस ठप काम के वजह से उनका रोज़गार बंद हो गया और जीवन के आवश्यक वस्तुओं के लिए भी पैसे न रहने लगे। इन मशीनी कारीगरी ने पुराने कारीगरों को बहुत नुकसान पहुँचाया। हम मशीन से चाहे कितने भी वस्तुऐं क्यों न बना ले परंतु यह वस्तुएँ कभी भी हाथ से बनाये हुए कारीगिरी की बराबरी नही कर सकते और यह ही सत्य है।

Q/H
QUALITY

indianjewellery.trustpass.alibaba.com

पाठ परिचय

- k i # n x B d
- x B d a 4 R
- pa# - s ar
- p/X no. k e]T t r i l i q 0 |
- Vyak r ` ivwag
- l eq n - bo2
- s aP t aih k p rI 9a

शब्दार्थ

- Caav - XaaEq
- Laaq - 0k p/kar ka pda4R
- v§ - pÐ_
- Waªl - jha> kaey lese dhk tl Aag hae
- caEq3 - carpa{
- Mainhar - cÙDya>bnanevala

प्रश्नों के उत्तर लिखिए

pXn: bdlUka pE<k pEa Kya 4a?

]Ttr: minhar ciDya bnane ka

pXn: leq k gimyae kI 7iQyame kha jata 4a?

]Ttr: Apnemama ke6r jata 4a|

pXn :bdlUik s kI ciDya bnata 4a?

]Ttr: laq kI|

व्याकरण

संज्ञा और इसके भेद उदाहरण सहित
संज्ञा के भेद
व्यक्तिवाचक
जातिवाचक
भाववाचक
द्रव्यवाचक
समूहवाचक
www.SarkariHelp.com

संज्ञा की परिभाषा

संसार के किसी भी प्राणी, वस्तु,
थान, जाति या भाव, दशा आदि
नाम को संज्ञा कहते है

1. संज्ञा (NOUN)

'संज्ञा' (सम+ज्ञा) शब्द का अर्थ है ठीक ज्ञान कराने वाला। अतःजिस शब्द से किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, जाति, भाव आदि के 'नाम' का बोध होता है उसे संज्ञा कहते हैं।जैसे-

प्राणियों के नाम - मोर, घोड़ा, अनिल, किरण, आदि।
वस्तुओं के नाम - अनार, रेडियो, दूध, मिठाई आदि।
स्थानों के नाम - कुतुबमीनार, भारत, दिल्ली आदि
भावों के नाम - मीठास, बुढापा, मिठास आदि

। 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा-

जिन संज्ञा शब्दों से किसी एक ही वस्तु, व्यक्ति या स्थान आदि का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे|

(i) व्यक्तियों के नाम राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, हजरत मोहम्मद, ईसामसीह इत्यादि।

(ii) फलों के नाम आम, अमरूद, सेब, संतरा, केला इत्यादि।

(iii) ग्रन्थों के नाम रामायण, रामचरितमानस, पद्मावत, कामायनी, कुरान, साकेत इत्यादि।

जातिवाचक संज्ञा की परिभाषा (definition of jati vachak sangya in hindi)

जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं, उन शब्दों को **जातिवाचक संज्ञा** कहते हैं। यानी, जातिवाचक संज्ञा शब्दों से एक जाति के अंतर्गत आने वाले सभी व्यक्तियों, वस्तुओं व स्थानों का बोध होता है।

जैसे-

वस्तु – मोबाइल, टीवी, कम्प्यूटर, पुस्तक, कार, ट्रक आदि।

स्थान – गाँव, स्कूल, शहर, बगीचा, नदी आदि।

प्राणी – आदमी, जानवर, पशु, पक्षी, गाय, लड़का आदि।

जातिवाचक संज्ञा के उदाहरण (examples of

भाववाचक संज्ञा

जिस शब्द से किसी के गुण, दोष, स्वभाव, भाव आदि का बोध होता हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे– लड़कपन, मिठास, जवानी, बचपन, मोटापा, थकावट, आदि।

चाकू
सोना
लकड़ी
चाँदी
ईंट

4. समूहवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति की वस्तुओं के समूह का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं;

जैसे (1) व्यक्तियों के समूह कक्षा, सेना, समूह, संघ, टुकड़ी, गिरोह और दल इत्यादि।

(2) वस्तुओं के समूह कुंज, ढेर, गट्ठर, मुट्ठा इत्यादि।

फूलों का – गुलदस्ता
चाबियों का – गुच्छा
लोगों की
नोटों की
लकड़ियों का –
सेना की
लताओं का – कुंज

गतिविधि

- AawBU` keic5 icpkakr sunar ke baremeiliq0-